गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे ।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥२४॥
कर्माण्यसङ्कल्पिततत्फलानि संन्यस्य विष्णौ परमात्मभूते ।
अवाप्य तां कर्ममहीमनन्ते तस्मिँल्लयं ये त्वमलाः प्रयान्ति ॥२५॥
जानीम नैतत्क्व वयं विलीने स्वर्गप्रदे कर्मणि देहबन्धम् ।
प्राप्स्याम धन्याः खलु ते मनुष्या ये भारते नेन्द्रियविप्रहीनाः ॥२६॥
नववर्षं तु मैत्रेय जम्बूद्वीपमिदं मया। लक्षयोजनविस्तारं संक्षेपात्कथितं तव ॥२७॥
जम्बूद्वीपं समावृत्य लक्षयोजनविस्तरः। मैत्रेय वलयाकारः स्थितः क्षारोदधिर्बहिः ॥२८॥
इति श्रीविष्णुमहापुराणे द्वितीयेंऽशे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

चौथा अध्याय

श्रीपराशर उवाच

क्षारोदेन यथा द्वीपो जम्बूसंज्ञोऽभिवेष्टितः। संवेष्ट्य क्षारमुदधिं प्लक्षद्वीपस्तथा स्थितः ॥१॥
जम्बूद्वीपस्य विस्तारः शतसाहस्रसम्मितः । स एव द्विगुणो ब्रह्मन् प्लक्षद्वीप उदाहृतः ॥२॥
सप्त मेधातिथेः पुत्राः प्लक्षद्वीपेश्वरस्य वै । ज्येष्ठः शान्तहयो नाम शिशिरस्तदनन्तरः ॥३॥
सुखोदयस्तथानन्दः शिवः क्षेमक एव च । ध्रुवश्च सप्तमस्तेषां प्लक्षद्वीपेश्वरा हि ते ॥४॥

करता है ॥२३॥ देवता लोग गीत गाते हैं कि वे पुरुष हम देवताओं से भी श्रेष्ठ हैं, जो स्वर्ग तथा मोक्ष प्राप्त करने की साधनभूत भूमि भारत वर्ष में जन्म पाते हैं । वे धन्य हैं ॥२४॥ इस कर्मभूमि में जन्म प्राप्त करके अपने फलाभिसन्धि (फल प्राप्त करने की इच्छा) से रहित होकर किए गये कर्मों को परब्रह्म स्वरूप भगवान् विष्णु को समर्पित करके उनमें ही लीन हो जाते हैं ॥२५॥ हमलोगों को तो इस बात का भी पता नहीं है कि इस स्वर्ग प्रदान करने वाले कर्मों की समाप्ति होने पर कहाँ जन्म मिलेगा । वे लोग धन्य हैं जो भारतवर्ष में जन्म लेकर इन्द्रियों की शक्ति से रहित नहीं हैं ॥२६॥ हे मैत्रेय ! इस प्रकार से मैंने संक्षेप में नव वर्षों वाले एक लाख योजन विस्तृत इस जम्बूद्वीप का वर्णन किया ॥२७॥ हे मैत्रेय ! इस जम्बूद्वीप को बाहर से घेरकर एक लाख योजन विस्तृत क्षार समुद्र स्थित है ॥२८॥

इस तरह श्रीविष्णुमहापुराण के दूसरे अंश के तीसरे अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥३॥

प्लक्ष तथा शाल्मलि आदि द्वीपों का विस्तृत वर्णन

श्रीपराशर महर्षि ने कहा— जिस तरह क्षार सागर जम्बूद्वीप को चारो ओर से घेरे हुए है, उसी तरह प्लक्ष द्वीप भी क्षार समुद्र को चारो ओर से घेरे हुए है ॥१॥ हे ब्रह्मन् ! जम्बूद्वीप का विस्तार एक लाख योजन है । प्लक्ष द्वीप का उसके दो गुना (दो लाख योजन) विस्तार है ॥२॥ प्लक्षद्वीप के स्वामी मेधातिथि के सात पुत्र हैं । उन सबों में बड़ा शान्तहय और उनसे छोटे शिशिर हैं ॥३॥ सुखोदय, आनन्द, शिव, क्षेमक तथा सातवाँ ध्रुव ये सात प्लक्ष

पूर्वं शान्तहयं वर्षं शिशिरं च सुखं तथा। आनन्दं च शिवं चैव क्षेमकं ध्रुवमेव च ॥५॥
मर्यादाकारकास्तेषां तथान्ये वर्षपर्वताः । सप्तैव तेषां नामानि शृणुष्व मुनिसत्तम ॥६॥
गोमेदश्चैव चन्द्रश्च नारदो दुन्दुभिस्तथा । सोमकः सुमनाश्चैव वैभ्राजश्चैव सप्तमः ॥७॥
वर्षाचलेषु रम्येषु वर्षेष्वेतेषु चानघाः । वसन्ति देवगन्धर्वसहिताः सततं प्रजाः ॥८॥
तेषु पुण्या जनपदाश्चिराच्च म्रियते जनः । नाधयो व्याधयो वापि सर्वकालसुखं हि तत् ॥९॥
तेषां नद्यस्तु सप्तैव वर्षाणां च समुद्रगाः । नामतस्ताः प्रवक्ष्यामि श्रुताः पापं हरन्ति याः ॥१०॥
अनुतप्ता शिखी चैव विपाशा त्रिदिवाक्लमा। अमृता सुकृता चैव सप्तैतास्तत्र निम्नगाः ॥११॥
एते शैलास्तथा नद्यः प्रधानाः कथितास्तव। क्षुद्रशैलास्तथा नद्यस्तत्र सन्ति सहस्रशः ।
ताः पिबन्ति सदा हृष्टा नदीर्जनपदास्तु ते ॥१२॥
अपसर्पिणी न तेषां वै न चैवात्सर्पिणी द्विज। न त्वेवास्ति युगावस्था तेषु स्थानेषु सप्तसु ॥१३॥
त्रेतायुगसमः कालः सर्वदैव महामते। प्लक्षद्वीपादिषु ब्रह्मञ्छाकद्वीपान्तिकेषु वै ॥१४॥
पञ्च वर्षसहस्राणि जना जीवन्त्यनामयाः । धर्माः पञ्च तथैतेषु वर्णाश्रमविभागशः ॥१५॥
वर्णाश्च तत्र चत्वारस्तान्निबोध वदामि ते ॥१६॥
अर्यकाः कुरराश्चैवा विदिश्या भाविनश्च ते । विप्रक्षत्रियवैश्यास्ते शूद्राश्च मुनिसत्तम ॥१७॥
जम्बूवृक्षप्रमाणस्तु तन्मध्ये सुमहांस्तरुः । प्लक्षस्तन्नामसंज्ञोऽयं प्लक्षद्वीपो द्विजोत्तम ॥१८॥
इज्यते तत्र भगवांस्तैर्वर्णैरार्यकादिभिः । सोमरूपी जगत्स्रष्टा सर्वः सर्वेश्वरो हरिः ॥१९॥
प्लक्षद्वीपप्रमाणेन प्लक्षद्वीपः समावृतः । तथैवेक्षुरसोदेन परिवेषानुकारिणा ॥२०॥

द्वीप के स्वामी हैं ॥४॥ उनके द्वारा अधिकृत वर्षों में प्रथम शान्तहयवर्ष, उसके बाद शिशिर वर्ष है फिर सुखवर्ष है। उसके बाद क्रमशः आनन्द, शिव, क्षेमक और ध्रुव वर्ष हैं ॥५॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! उनके मार्यादा कारक सात वर्ष पर्वत है उनका नाम सुनो ॥६॥ गोमेद, चन्द्र, नारद, दुन्दुभि, सोमक, सुमना एवं वैभ्राज सातवाँ पर्वत है ॥७॥ इन अत्यन्त मनोहर वर्ष पर्वतों तथा वर्षों में देवता एवं गन्धर्वों के साथ निष्पाप प्रजा निवास करती है ॥८॥ उन वर्षों में रहने वाली प्रजा पुण्यवती होती है, वहाँ की प्रजा दीर्घ काल के बाद मरती है । वहाँ किसी को अधि-व्याधि नहीं होती हैं सदा वहाँ सुख ही प्राप्त होता है ॥९॥ उन वर्षों में समुद्रगामिनी सात नदियाँ हैं । मैं उनका नाम बतलाता हूँ । उनके नाम सुनने मात्र से पाप विनष्ट हो जाते हैं ॥१०॥ अनुतप्ता, शिखी, विपाशा, त्रिदिव, क्लमा, अमृता तथा सुकृता, ये वहाँ की सात नदियाँ हैं ॥११॥ इस तरह से मैं तुम्हें प्लक्ष द्वीप के प्रधान पर्वतों तथा नदियों को बतलाया। वहाँ पर छोटी-छोटी नदियाँ और छोटे-छोटे पर्वत हजारों हैं । वहाँ के रहने वाले लोग उन नदियों के जल को पीते हैं ॥१२॥ वहाँ के लोगों में ह्रास अथवा वृद्धि नहीं होती है और न तो वहाँ युगों की व्यवस्था है ॥१३॥ हे महामते ! प्लक्ष द्वीप से लेकर शाकद्वीप तक सदा त्रेतायुग के समान काल बना रहता है ॥१४॥ वहाँ की प्रजा पाँच हजार वर्ष तक जीवित रहती है । वहाँ विभाग पूर्वक पाँच धर्मों की प्रजा रहती है ॥१५॥ वहाँ के चार वर्णों को मैं तुम्हें बतलाता हूँ ॥१६॥ वहाँ के जो आर्यक कुरर, विदिश्य और भावी वर्ण हैं; वे ही क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्ण हैं ॥१७॥ जम्बूद्वीप के जम्बू वृक्ष के आकार के ही समान आकार वाला एक पाकड़ का वृक्ष है । उसी के नाम पर उस द्वीप का नाम प्लक्ष द्वीप है ॥१८॥ वहाँ के आर्यक आदि वर्णों के लोगों द्वारा सोमरूप धारी सर्वेश्वर भगवान् श्रीहरि पूजे जाते हैं ॥१९॥ जितना प्लक्षद्वीप का परिमाण है उतने ही परिमाण वाले इक्षुरस के सागर से वह

इत्येवं तव मैत्रेय प्लक्षद्वीप उदाहृतः। संक्षेपेण मया भूयः शाल्मलं मे निशामय ॥२१॥
शाल्मलस्येश्वरो वीरो वपुष्मांस्तत्सुताञ्छृणु। तेषां तु नामसंज्ञानि सप्तवर्षाणि तानि वै ॥२२॥
श्वेतोऽथ हरितश्चैव जीमूतो रोहितस्तथा। वैद्युतो मानसश्चैव सुप्रभश्च महामुने ॥२३॥
शाल्मलेन समुद्रोऽसौ द्वीपेनेक्षुरसोदकः। विस्तारद्विगुणेनाथ सर्वतः संवृतः स्थितः ॥२४॥
तत्रापि पर्वताः सप्त विज्ञेया रत्नयोनयः। वर्षाभिव्यञ्जका ये तु तथा सप्त च निम्नगाः॥२५॥
कुमुदश्चोन्नतश्चैव तृतीयश्च बलाहकः। द्रोणो यत्र महौषध्यः स चतुर्थो महीधरः॥२६॥
कङ्कस्तु पञ्चमः षष्ठो महिषः सप्तमस्तथा। ककुद्मान्पर्वतवरः सरिन्नामानि मे श्रृणु॥२७॥
योनिस्तोया वितृष्णा च चन्द्रा मुक्ता विमोचनी। निवृत्तिः सप्तमी तासां स्मृतास्ताः पापशान्तिदाः॥२८॥
श्वेतञ्च हरितं चैव वैद्युतं मानसं तथा। जीमूतं रोहितं चैव सुप्रभं चापि शोभनम्।
सप्तैतानि तु वर्षाणि चातुर्वर्ण्ययुतानि वै ॥२९॥
शाल्मले ये तु वर्णाश्च वसन्त्येते महामुने। कपिलाश्चारुणाः पीताः कृष्णाश्चैव पृथक् पृथक् ॥३०॥
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चैव यजन्ति तम्। भगवन्तं समस्तस्य विष्णुमात्मानमव्ययम्।
वायुभूतं मखश्रेष्ठैर्यज्वानो यज्ञसंस्थितिम् ॥३१॥
देवानामत्रसान्निध्यमतीव सुमनोहरे। शाल्मलिः सुमहान्वृक्षो नाम्ना निर्वृतिकारकः ॥३२॥
एष द्वीपः समुद्रेण सुरोदेन समावृतः। विस्ताराच्छाल्मलस्यैव समेन तु समन्ततः ॥३३॥
सुरोदकः परिवृतः कुशद्वीपेन सर्वतः। शाल्मलस्य तु विस्ताराद् द्विगुणेन समन्ततः ॥३४॥
ज्योतिष्मतः कुशद्वीपे सप्त पुत्राञ्छृणुष्व तान् ॥३५॥

द्वीप घिरा है ॥२०॥ हे मैत्रेय ! इस तरह संक्षेप में मैंने तुम्हें प्लक्षद्वीप का वर्णन सुनाया अब तुम मुझसे शाल्मल द्वीप का वर्णन सुनो ॥२१॥ शाल्मल द्वीप के स्वामी वपुष्मान् हुए। अब उनके पुत्रों को सुनो। उनके सात पुत्रों के ही नाम पर शाल्मल द्वीप के सात वर्षों के नाम हैं। श्वेत, हरित, जीमूत, रोहित, वैद्युत, मानस और सुप्रभ ॥२२-२३॥ प्लक्षद्वीप को घेरने वाला इक्षुरसोद अपने दूगने परिमाण वाले शाल्मल द्वीप से घिरा है ॥२४॥ यहाँ भी रत्नों के उद्भव स्थान स्वरूप सात पर्वत हैं। वहाँ के वर्षों के अभिव्यञ्जक सात नदियाँ भी हैं ॥२५॥ कुमुद, उन्नत, तीसरा बलाहक, तथा चौथा पर्वत द्रोण हैं। जहाँ महान् औषधियाँ मिलती हैं ॥२६॥ वहाँ का पाँचवाँ पर्वत कङ्क है, और छठा महिष है। वहाँ का सातवाँ पर्वत ककुद्मान् है। अब नदियों का नाम सुनो ॥२७॥ उन नदियों के नाम योनी, तोया, चन्द्रा, मुक्ता, विमोचिनी और निवृति है। इनका स्मरण करने मात्र से ही पाप विनष्ट हो जाते हैं ॥२८॥ शाल्मल द्वीप के श्वेत, हरित, वैद्युत, मानस, जीमूत, रोहित तथा सुन्दर सुप्रभ ये सात वर्ष हैं ॥२९॥ हे महामुने ! शाल्मल द्वीप में चार वर्णों के लोग रहते हैं। उन वर्णों के पृथक्-पृथक् नाम हैं कपिल, अरुण, पीत और कृष्ण॥३०॥ ये ही क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं। वे सब सबों की आत्मा यज्ञों के आश्रय वायुरूप तथा अव्यय भगवान् विष्णु की आराधना श्रेष्ठ यज्ञों के द्वारा करते हैं ॥३१॥ मनोहर शाल्मल द्वीप में देवताओं की स्थिति बनी रहती है। शाल्मलि का वृक्ष अत्यन्त महान् है और अपने नाम मात्र से शान्तिप्रद है ॥३२॥ यह द्वीप अपने ही समान परिमाण वाले सुरा समुद्र से घिरा हुआ है ॥३३॥ वह सुरोदक समुद्र कुश द्वीप से घिरा है। कुश द्वीप का परिमाण शाल्मल द्वीप के दो गुना है ॥३४॥ कुश द्वीप के स्वामी ज्योतिष्मान् के सात पुत्रों का नाम मुझसे सुनो। उद्भिद्, वेणुमान्, वैरथ, लम्बन, धृति, प्रभाकर तथा कपिल। उन्हीं के नाम पर वहाँ के वर्षों का नाम पड़ा

उद्भिदो वेणुमांश्चैव वैरथो लम्बनो धृतिः । प्रभाकरोथ कपिलस्तन्नामा वर्षपद्धतिः ॥३६॥
तस्मिन्वसन्ति मनुजाः सह दैतेयदानवैः । तथैव देवगन्धर्वयक्षकिम्पुरुषादयः ॥३७॥
वर्णास्तत्रापि चत्वारो निजानुष्ठानतत्पराः । दमिनः शुष्मिणः स्नेहा मन्देहाश्च महामुने ॥३८॥
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चानुक्रमोदिताः ॥३९॥
यथोक्तकर्मकर्तृत्वात्स्वाधिकारक्षयाय ते । तत्रैव तं कुशद्वीपे ब्रह्मरूपं जनार्दनम् ।
यजन्तः क्षपयन्त्युग्रमधिकारफलप्रदम् ॥४०॥
विद्रुमो हेमशैलश्च द्युतिमान् पुष्पवांस्तथा । कुशेशयो हरिश्चैव सप्तमो मन्दराचलः ॥४१॥
वर्षाचलास्तु सप्तैते तत्र द्वीपे महामुने । नद्यश्च सप्त तासां तु श्रृणु नामान्यनुक्रमात् ॥४२॥
धूतपापा शिवा चैव पवित्रा सम्मतिस्तथा । विद्युदम्भा मही चान्या सर्वपापहरास्त्विमाः ॥४३॥
अन्याः सहस्रशस्तत्र क्षुद्रनद्यस्तथाचलाः । कुशद्वीपे कुशस्तम्बः संज्ञया तस्य तत्स्मृतम् ॥४४॥
तत्प्रमाणेन स द्वीपो घृतोदेन समावृतः । घृतोदश्च समुद्रो वै क्रौञ्चद्वीपेन संवृतः ॥४५॥
क्रौञ्चद्वीपो महाभाग श्रूयताञ्चापरो महान् । कुशद्वीपस्य विस्ताराद् द्विगुणो यस्य विस्तरः ॥४६॥
क्रौञ्चद्वीपे द्युतिमतः पुत्रास्तस्य महात्मनः । तन्नामानि च वर्षाणि तेषां चक्रे महीपतिः ॥४७॥
कुशलो मन्दगश्चोष्णः पीवरोऽथान्धकारकः । मुनिश्च दुन्दुभिश्चैव सप्तैते तत्सुता मुने ॥४८॥
तत्रापि देवगन्धर्वसेविताः सुमनोहराः । वर्षाचला महाबुद्धे तेषां नामानि मे श्रृणु ॥४९॥
क्रौञ्चश्च वामनश्चैव तृतीयश्चान्धकारकः । चतुर्थो रत्नशैलश्च स्वाहिनी हयसन्निभः ॥५०॥
दिवावृत्पञ्चमश्चात्र तथान्यः पुण्डरीकवान् । दुन्दुभिश्च महाशैलो द्विगुणास्ते परस्परम् ।
द्वीपा द्वीपेषु ये शैला यथा द्वीपेषु ते तथा ॥५१॥

है ॥३५-३६॥ उस द्वीप में मनुष्य, देव, गन्धर्व, यक्ष तथा किम्पुरुष दैत्यों तथा दानवों के साथ रहते हैं ॥३७॥ हे महामुने ! वहाँ भी दमी, शुष्मी, स्नेह तथा मन्देह नामक चारो वर्णों के अपने वर्णों के अनुसार कर्मानुष्ठान परायण जीव रहते हैं ॥३८॥ वे ही क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्ण के हैं ॥३९॥ शास्त्रोक्त कर्मों को करने वाले होने के कारण अपने अधिकार का क्षय करने के लिए वे लोग कुश द्वीप में ही ब्रह्म स्वरूप भगवान् जनार्दन की पूजा करते हुए प्रारब्धफल को प्रदान करने वाले अहङ्कार का क्षय करते हैं ॥४०॥ हे महामुने ! विद्रुम, हेमशैल, द्युतिमान्, पुष्पवान्, कुशेशय, हरि तथा सातवाँ मन्दराचल, ये वहाँ के सात वर्ष पर्वत हैं । वहाँ की नदियाँ भी सात हैं उनका क्रमशः नाम सुनो ॥४१-४२॥ धूतपापा, शिवा, पवित्रा, सम्मति, विद्युदम्भा, मही तथा सर्वपापापहा ये वहाँ की सात नदियाँ हैं ॥४३॥ वहाँ पर दूसरी हजारों छोटी-छोटी नदियाँ तथा पर्वत हैं । कुशद्वीप में एक कुश का स्तम्ब (झाड़) है, उसी के कारण उसका नाम कुशद्वीप है ॥४४॥ कुशद्वीप अपने ही समान परिमाण वाले घृतोदसागर से घिरा हुआ है । घृतोदसागर भी क्रौञ्च द्वीप से घिरा हुआ है । हे महाभाग ! यह दूसरा महान् द्वीप है । इसका कुशद्वीप के दो गुना विस्तार है ॥४५-४६॥ क्रौञ्च द्वीप के अधिपति द्युतिमान् के सात पुत्रों के ही नाम पर वहाँ के सात वर्षों का नाम पड़ा है ॥४७॥ कुशल, मन्दग, उष्ण, पीवर, अन्धकारक, मुनि और दुन्दुभि, ये द्युतिमान् के सात पुत्र हैं ॥४८॥ हे महामुने ! वहाँ भी देवों तथा गन्धर्वों से सेवित अत्यन्त मनोहर सात वर्ष पर्वत हैं । उन सबों का नाम मुझसे सुनो ॥४९॥ क्रौञ्च, वामन तीसरा अन्धकारक, चौथा घोड़े के मुख के सदृश रत्नमय स्वाहिनी पर्वत ॥५०॥ पाँचवाँ दिवावृत्, छठा पुण्डरीकवान् और सातवाँ महाशैल दुन्दुभि है । वे परस्पर में एक

वर्षेष्वेतेषु रम्येषु तथा शैलवरेषु च। निवसन्ति निरातङ्काः सह देवगणैः प्रजाः ॥५२॥
पुष्कराः पुष्कला धन्यास्तिष्याख्याश्च महामुने। ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चानुक्रमोदिताः ॥५३॥
नदीर्मैत्रेय ते तत्र याः पिबन्ति शृणुष्व ताः। सप्तप्रधानाः शतशस्तत्रान्याः क्षुद्रनिम्नगाः ॥५४॥
गौरी कुमुद्वती चैव सन्ध्या रात्रिर्मनोजवा। क्षान्तिश्च पुण्डरीका च सप्तैता वर्षनिम्नगाः ॥५५॥
तत्रापि विष्णुर्भगवान्पुष्कराद्यैर्जनार्दनः। यागै रुद्रस्वरूपश्च इज्यते यज्ञसन्निधौ ॥५६॥
क्रौञ्चद्वीपः समुद्रेण दधिमण्डोदकेन च। आवृतः सर्वतः क्रौञ्चद्वीपतुल्येन मानतः ॥५७॥
दधिमण्डोदकश्चापि शाकद्वीपेन संवृतः। क्रौञ्चद्वीपस्य विस्ताराद् द्विगुणेन महामुने ॥५८॥
शाकद्वीपेश्वरस्यापि भव्यस्य सुमहात्मनः। सप्तैव तनयास्तेषां ददौ वर्षाणि सप्त सः ॥५९॥
जलदश्च कुमारश्च सुकुमारो मरीचकः। कुसुमोदश्च मौदाकिः सप्तमश्च महाद्रुमः ॥६०॥
तत्संज्ञान्येव तत्रापि सप्त वर्षाण्यनुक्रमात्। तत्रापि पर्वताः सप्त वर्षविच्छेदकारिणः ॥६१॥
पूर्वस्तत्रोदयगिरिर्जलाधारस्तथापरः। तथा रैवतकः श्यामस्तथैवास्तगिरिर्द्विज।
आम्बिकेयस्तथा रम्यः केसरी पर्वतोत्तमः ॥६२॥
शाकस्तत्र महावृक्षः सिद्धगन्धर्वसेवितः। यत्रत्यवातसंस्पर्शादाह्लादो जायते परः ॥६३॥
तत्र पुण्या जनपदाश्चातुर्वर्ण्यसमन्विताः। नद्यश्चात्र महापुण्याः सर्वपापभयापहाः ॥६४॥
सुकुमारी कुमारी च नलिनी धेनुका च या। इक्षुश्च वेणुका चैव गभस्ती सप्तमी तथा ॥६५॥
अन्याश्च शतशस्तत्र क्षुद्रनद्यो महामुने। महीधरास्तथा सन्ति शतशोऽथ सहस्रशः ॥६६॥
ताः पिबन्ति मुदा युक्ता जलदादिषु ये स्थिताः। वर्षेषु ते जनपदाः स्वर्गादभ्येत्य मेदिनीम् ॥६७॥

दूसरे से दो गुना बड़े हैं। वे द्वीप एक दूसरे से दो गुना बड़े हैं, उसी तरह वहाँ के पर्वत भी एक दूसरे से दो गुना बड़े हैं ॥५१॥ मनोहर वर्षों तथा पर्वतों में प्रजा निर्भय होकर देवताओं के साथ निवास करती है ॥५२॥ पुष्पक, पुष्कल, धन्य तथा तिष्य वर्ण ही क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र कहे गये हैं ॥५३॥ हे मैत्रेय ! वहाँ लोग जिन नदियों का जल पीते हैं, वे वहाँ की सात प्रधान नदियाँ हैं और दूसरी छोटी-छोटी सैकड़ों नदियाँ ॥५४॥ वहाँ के वर्षों की क्रमशः गौरी, कुमुद्वती, सन्ध्या, रात्रि, मनोजवा, क्षान्ति तथा पुण्डरीका ये सात वर्ष नदियाँ हैं॥५५॥ वहाँ भी रुद्र रूपधारी भगवान् विष्णु वहाँ के पुष्पकर आदि वर्णों के द्वारा यज्ञादि से पूजे जाते हैं ॥५६॥ क्रौञ्च द्वीप भी अपने ही समान परिमाण वाले दधिमण्डोदक समुद्र से घिरा हुआ है ॥५७॥ दधिमण्डोदक भी अपने दो गुना परिमाण वाले शाक द्वीप से घिरा है ॥५८॥ शाकद्वीप के अधिपति महात्मा भव्य के भी सात ही पुत्र थे। उन सबों के भव्य ने वहाँ के सात वर्षों को प्रदान कर दिया ॥५९॥ उन सातों पुत्रों के नाम क्रमशः जलद, कुमार, सुकुमार, मरीचक, कुसुमोद, मौदकि और सातवाँ महाद्रुम था ॥६०॥ उन्हीं के नामों के क्रम से वहाँ के सातों वर्षों का नाम पड़ा। वहाँ भी एक वर्ष से दूसरे वर्ष को विभक्त करने वाले सात वर्ष पर्वत हैं ॥६१॥ है द्विज ! वहाँ सबसे पहला पर्वत उदयगिरि है, दूसरा पर्वत जलाधार है, तीसरा रैवतक, चौथा श्याम, पाँचवाँ अस्ताचल, छठा आम्बिकेय और सातवाँ मनोहर केसरी पर्वत है ॥६२॥ वहाँ पर शाक नामक महावृक्ष है। देवता एवं गन्धर्व उसका सेवन करते हैं। वहाँ की वायु के संस्पर्श मात्र से मनुष्य के मन में आह्लाद उत्पन्न होता है ॥६३॥ वहाँ के पवित्र जनपद चारों वर्णों के जीवों से युक्त हैं। वहाँ की नदियाँ अत्यन्त पवित्र तथा पाप एवं भय को दूर करने वाली हैं ॥६४॥ वे नदियाँ सुकुमारी, कुमारी, नलिनी, धेनुका, इक्षु, वेणुका तथा सातवीं गभस्ती नाम वाली हैं ॥६५॥ हे महामुने ! वहाँ दूसरी सैकड़ों छोटी-छोटी नदियाँ तथा छोटे-छोटे हजारों पर्वत हैं ॥६६॥ स्वर्गलोक से आकर जो जीव पृथिवी पर जन्म लेते हैं वे ही उन जलदा आदि नदियों का जल पीते हैं ॥६७॥ उनमें न तो धर्म की हानि होती है और न तो परस्पर

धर्महानिर्न तेष्वस्ति न संघर्षः परस्परम्। मर्यादाव्युत्क्रमो नापि तेषु देशेषु सप्तसु ॥६८॥
मगाश्च मागधाश्चैव मानसा मन्दगास्तथा। मगा ब्राह्मणभूयिष्ठा मागधाः क्षत्रियास्तथा।
वैश्यास्तु मानसास्तेषां शूद्रास्तेषां तु मन्दगाः ॥६९॥
शाकद्वीपे तु तैर्विष्णुः सूर्यरूपधरो मुने। यथोक्तैरिज्यते सम्यक्कर्मभिर्नियतात्मभिः ॥७०॥
शाकद्वीपस्तु मैत्रेय क्षीरोदेन समावृतः। शाकद्वीपप्रमाणेन वलयेनेव वेष्टितः ॥७१॥
क्षीराब्धिः सर्वतो ब्रह्मन्पुष्कराख्येन वेष्टितः। द्वीपेन शाकद्वीपात्तु द्विगुणेन समन्ततः ॥७२॥
पुष्करे सवनस्यापि महावीरोऽभवत्सुतः। धातकिश्च तयोस्तत्र द्वे वर्षे नामचिह्निते।
महावीरं तथैवान्यद्धातकीखण्डसंज्ञितम् ॥७३॥
एकश्चात्र महाभाग प्रख्यातो वर्षपर्वतः। मानसोत्तरसंज्ञो वै मध्यतो वलयाकृतिः ॥७४॥
योजनानां सहस्राणि ऊर्ध्वं पञ्चाशदुच्छ्रितः। तावदेव च विस्तीर्णः सर्वतः परिमण्डलः ॥७५॥
पुष्करद्वीपवलयं मध्येन विभजन्निव। स्थितोऽसौ तेन विच्छिन्नं जातं तद्वर्षकद्वयम् ॥७६॥
वलयाकारमेकैकं तयोर्वर्षं तथा गिरिः ॥७७॥
दशवर्षसहस्राणि तत्र जीवन्ति मानवाः। निरामया विशोकाश्च रागद्वेषादिवर्जिताः ॥७८॥
अधमोत्तमौ न तेष्वास्तां न वध्यवधकौ द्विज। नेर्ष्यासूया भयं द्वेषो दोषो लोभादिको न च ॥७९॥
महावीरं बहिर्वर्षं धातकीखण्डमन्ततः। मानसोत्तरशैलस्य देवदैत्यादिसेवितम् ॥८०॥
सत्यानृते न तत्रास्तां द्वीपे पुष्करसंज्ञिते। न तत्र नद्यः शैला वा द्वीपे वर्षद्वयान्विते ॥८१॥
तुल्यवेषास्तु मनुजा देवास्तत्रैकरूपिणः। वर्णाश्रमाचारहीनं धर्माचरणवर्जितम् ॥८२॥
त्रयी वार्ता दण्डनीतिशुश्रूषारहितञ्च यत्। वर्षद्वयं तु मैत्रेय भौमः स्वर्गोऽयमुत्तमः ॥८३॥

में उनमें संघर्ष होता है। वहाँ के सातों देशों (वर्षों) में कोई भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता है ॥६८॥ मग, मागध, मानस तथा मन्दग ये वहाँ के चार वर्ण हैं। मग ब्राह्मण हैं, मागध क्षत्रिय हैं, मानस वैश्य वर्ण के हैं और उनमें मन्दग शूद्र वर्ण हैं ॥६९॥ हे द्विज ! शाक द्वीप में शास्त्रोदित कर्मों को करने वाले मग आदि चारो वर्णों के जीवों द्वारा सूर्य रूप धारी भगवान् विष्णु पूजे जाते हैं ॥७०॥ हे मैत्रेय ! वह शाक द्वीप भी अपने ही समान आकार वाले क्षीर सागर से घिरा हुआ है ॥७१॥ हे ब्रह्मन् ! वह क्षीरसागर भी शाकद्वीप से दो गुने परिमाण वाले पुष्कर द्वीप से आवृत है ॥७२॥ पुष्पकर द्वीप के अधिपति सवन के दो पुत्र हुए महावीर तथा धातकि। अतएव वहाँ उनके नाम वाले दो वर्ष हैं। उनके नाम महावीर खण्ड और धातकि खण्ड हैं ॥७३॥ हे महाभाग ! वहाँ पर एक ही वर्ष पर्वत है। उसका नाम मानसोत्तर है। वह कङ्कणाकार है ॥७४॥ वह पचास हजार योजन ऊँचा है और इतने ही परिमाण में सब ओर से गोलाकार फैला हुआ है ॥७५॥ यह पर्वत ही पुष्कर द्वीप को दो भागों में विभक्त करता है, उसी के द्वारा वहाँ दो वर्ष हो गये ॥७६॥ वहाँ के दोनो वर्ष और पर्वत दोनों ही बलयाकृति हैं ॥७७॥ वहाँ के लोग अभय (रोग) शोक तथा राग एवं द्वेष से रहित होकर दश हजार वर्ष पर्यन्त जीवित रहते हैं ॥७८॥ हे द्विज ! वहाँ पर कोई मध्यम या उत्तम, या बाध्य अथवा बध करने वाला नहीं होता है। वहाँ के लोगों में ईर्ष्या, द्वेष, असूया, भय तथा लोभ आदि दोष नहीं होते हैं ॥७९॥ महावीर वर्ष मानसरोवर पर्वत के बाहर की ओर है, जबकि धातकि खण्ड भीतर की ओर। यहाँ देवता तथा दैत्य निवास करते हैं ॥८०॥ उस पुष्कर द्वीप में सत्य और मिथ्या नहीं है, वहाँ नदियाँ और पर्वत भी नहीं हैं। वहाँ केवल दो वर्ष हैं ॥८१॥ वहाँ के मनुष्यों के वेष एक समान हैं। देवताओं का भी एक समान ही रूप है, वर्णों एवं आश्रमों के आपचारों से रहित, धर्माचरण से रहित, त्रयी, वार्ता, दण्ड, नीति तथा शुश्रूषा से रहित यहाँ के दोनों वर्ष मानो पृथिवी के स्वर्ग हैं ॥८३॥ हे मुने ! महावीर खण्ड तथा धातकि

सर्वर्तुसुखदः कालो जरारोगादिवर्जितः। धातकीखण्डसंज्ञेऽथ महावीरे च वै मुने ॥८४॥
न्यग्रोधः पुष्करद्वीपे ब्रह्मणः स्थानमुत्तमम्। तस्मिन्निवसति ब्रह्मा पूज्यमानः सुरासुरैः ॥८५॥
स्वादूदकेनोदधिना पुष्करः परिवेष्टितः। समेन पुष्करस्यैव विस्तारान्मण्डलं तथा ॥८६॥
एवं द्वीपाः समुद्रैश्च सप्त सप्तभिरावृताः। द्वीपश्चैव समुद्रश्च समानौ द्विगुणौ परौ ॥८७॥
पयांसि सर्वदा सर्वसमुद्रेषु समानि वै। न्यूनातिरिक्तता तेषां कदाचिन्नैव जायते ॥८८॥
स्थालीस्थमग्निसंयोगादुद्रेकि सलिलं यथा। तथेन्दुवृद्धौ सलिलमम्भोधौ मुनिसत्तम ॥८९॥
अन्यूनानतिरिक्ताश्च वर्धन्त्यापो ह्रसन्ति च। उदयास्तमनेष्विन्दोः पक्षयोः शुक्लकृष्णयोः ॥९०॥
दशोत्तराणि पञ्चैव ह्यङ्गुलानां शतानि वै। अपां वृद्धिक्षयौ दृष्टौ सामुद्रीणां महामुने ॥९१॥
भोजनं पुष्करद्वीपे तत्र स्वयमुपस्थितम्। षड्रसं भुञ्जते विप्र प्रजाः सर्वाः सदैव हि ॥९२॥
स्वादूदकस्य परितो दृश्यतेऽलोकसंस्थितिः। द्विगुणा काञ्चनी भूमिः सर्वजन्तुविवर्जिता ॥९३॥
लोकालोकस्ततश्शैलो योजनायुतविस्तृतः। उच्छ्रायेणापि तावन्ति सहस्त्रण्यचलो हि सः ॥९४॥
ततस्तमः समावृत्य तं शैलं सर्वतः स्थितम्। तमश्चाण्डकटाहेन समन्तात्परिवेष्टितम् ॥९५॥
पञ्चाशत्कोटिविस्तारा सेयमुर्वी महामुने। सहैवाण्डकटाहेन सद्वीपाब्धिमहीधरा ॥९६॥
सेयं धात्री विधात्री च सर्वभूतगुणाधिका। आधारीभूता सर्वेषां मैत्रेय जगतामिति ॥९७॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे द्वितीयेंऽशे चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

खण्ड दोनों में समय, सदा जरा तथा रोग से रहित एवं सभी ऋतुओं में सुखप्रद रहता है ॥८४॥ पुष्करद्वीप में न्यग्रोध (वटवृक्ष) ब्रह्माजी का उत्तम स्थान है जहाँ पर देवताओं एवं दानवों से पूजित ब्रह्माजी निवास करते हैं ॥८५॥ पुष्कर द्वीप स्वादिष्ट जल के समुद्र से घिरा हुआ है। उसका उतना ही विस्तार है जितना विस्तार पुष्कर द्वीप का है ॥८६॥ इस तरह सातो द्वीप अपने समान ही परिमाण वाले सात समुद्रों से घिरे हुए हैं। पूर्व-पूर्व द्वीपों की अपेक्षा उत्तरोत्तर द्वीप दो गुने अधिक परिमाण वाले हैं ॥८७॥ सभी समुद्रों में जल सर्वदा समान मात्रा में बने रहते हैं, वे कभी भी घटते अथवा बढ़ते नहीं है ॥८८॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! जिस तरह पात्र का जल अग्नि का संयोग प्राप्त करके उबलने लगता है, उसी तरह चन्द्रमा की वृद्धि होने पर समुद्र का जल भी उछलने लगता है ॥८९॥ शुक्ल एवं कृष्ण पक्षों में न्यून अथवा अधिक नहीं होने पर भी चन्द्रमा के उदय तथा अस्त होने पर समुद्र का जल घटता बढ़ता रहता है ॥९०॥ हे महामुने ! समुद्र के जल की वृद्धि अथवा न्यूनता पाँच सौ दश अङ्गुल देखी जा सकती है ॥९१॥ पुष्कर द्वीप में सबके समक्ष भोजन अपने आप उपस्थित हो जाता है। हे विप्र ! वहाँ की प्रजा सर्वदा षड्रस युक्त भोजन किया करती है ॥९२॥ स्वादिष्ट जल के चारो ओर लोगों के निवास से रहित, सभी जीवों से रहित दो गुनी स्वर्णमयी भूमि दिखायी देती है ॥९३॥ उसके पश्चात् दश हजार योजन विस्तृत लोकालोक पर्वत हैं। वह पर्वत दश हजार योजन ऊँचा भी है ॥९४॥ उसके पश्चात् उस पर्वत को चारो ओर से अन्धकार घेरे हुए है। वह अन्धकार अण्डकटाह से चारो ओर से घिरा है ॥९५॥ हे महामुने ! यह पृथिवी अण्डकटाह, पर्वतों तथा सागरों के साथ पचास करोड़ योजन विस्तृत है ॥९६॥ यह पृथिवी आकाश आदि समस्त भूतों की अपेक्षा अधिक गुणों वाली, सम्पूर्ण जगत् को धारण करने वाली तथा उसका पालन और उद्भव करने वाली है ॥९७॥

इस तरह श्रीविष्णुमहापुराण के दूसरे अंश के चौथे अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥४॥